उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'अ' (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर | केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ता... | परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना

प्रश्न-1 : उत्तर

उत्तर - (क)

मिखाइल गोर्बाचेव (iii)

उत्तर - (ख)

2012 (ii)

उत्तर - (ग)

12 वें (iv)

उत्तर (घ)

ब्रिटेन (i)

उत्तर (ङ)

ब्राजील (iii)

उत्तर (च)

अब्दुल गफ्फार खान (ii)

उत्तर (छ)

1954 (iii)

उत्तर - (ज)

1971 (i)

उत्तर (झ)

A तथा R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है। (i)

उत्तर - (ञ)

A तथा R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता। (ii)

प्रश्न - 2 : उत्तर

संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रथम महासचिव ट्रिग्व ली थे।

प्रश्न - 3 : उत्तर

'वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इंडिजिनस पीपल' संगठन का गठन 1975 में हुआ था।

प्रश्न - 4 : उत्तर

भारत में आर्थिक सुधारों की योजना 1991 में शुरु की गई।

प्रश्न - 5 : उत्तर

26 नवम्बर 1949 को हमारा संविधान अंगीकृत किया गया था तथा 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था।

प्रश्न - 6 : उत्तर

लाल बहादुर शास्त्री जी का प्रसिद्ध नारा - "जय जवान, जय किसान" |

प्रश्न - 7 : उत्तर

1984 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 414 सीटें मिली थी |

प्रश्न - 8 : उत्तर

* आसियान → दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों का संगठन |
* 1967 में पाँच देशों - इण्डोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस - ने बैंककॉक घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे तथा इसकी स्थापना की थी |
* 1967 के बाद निम्न पाँच देश इसमें शामिल हुए थे :-

(1) लाओस
(2) ब्रुनेई दारुस्सलाम
(3) कम्बोडिया
(4) वियतनाम
(5) म्यांमार

प्रश्न - 9 : उत्तर

* अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है |
* वर्तमान में इसमें 182 देश शामिल हैं |
* अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) विश्व में मुद्रा के व्यापार को बढ़ावा देता है तथा विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं के उदारीकरण को भी बढ़ावा देता है |
* इसने वैश्वीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है |
* कई विकासशील देशों की शिकायत रहती है कि इसकी

नीतियाँ भेदभावपूर्ण होती है और विकसित देशों के पक्ष में होती हैं।

प्रश्न-10 : उत्तर

* 1992 में ब्राजील के रियो-डी-जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में एजेन्डा-21 तथा जलवायु परिवर्तन से संबंधित बुनियादी नियमाचार (UNFCCC) अस्तित्व में आया था।
* UNFCCC → United Nations Framework Convention for Climate Change.
* इसने जलवायु परिवर्तन के संबंध मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
* इसके अंतर्गत साझी सम्पदा पर अलग-अलग जिम्मेदारियों की बात कही गई है।

प्रश्न-11 : उत्तर

* वैश्वीकरण की अवधारणा 'प्रवाह' पर ही आधारित है।
* इसमें विभिन्न प्रवाह शामिल हैं, जैसे-
  - वस्तुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवाह।
  - पूँजी का प्रवाह
  - विचारों का प्रवाह, तथा
  - व्यक्तियों का एक से दूसरे देश में प्रवाह।
* वैश्वीकरण ने इन प्रवाहों की गति को प्रभावित किया है तथा इन्हे तेज कर दिया है।
* इन प्रवाहों बडी तेजी से और बडी मात्रा मे होने से ही वैश्वीकरण जन्मा है।

प्रश्न-12 : उत्तर

* द्वितीय ~~विश्व~~ पंचवर्षीय योजना 1956 से 1961 तक चली।
* इस योजना का लक्ष्य तेज गति से आर्थिक विकास करना था।
* इस योजना में सबसे ज्यादा ज़ोर औद्योगिकरण पर दिया गया था।
* इसमें भारी उद्योगों की स्थापना की गई तथा आयातों पर भारी शुल्क का प्रावधान भी लगाया गया था जिससे घरेलू उद्योगों को संरक्षण दिया जा सके।
* पी. सी. महालनोबिस को इसका अंगीकर्ता कहा जाता है। इस योजना में उद्योगों पर ही ध्यान केन्द्रित था।

प्रश्न - 13 : उत्तर

* 1949 में माओ के नेतृत्व में समाजवादी क्रांति के बाद चीनी गणराज्य अस्तित्व में आया था।
* शुरुआत में इसने अपनी घरेलू सीमाएँ बंद रखी।
* परन्तु 1972 में अमेरिका के साथ संबंध बनाकर इसने अपने आर्थिक एकांतवास को दूर किया।
* 1973 में चाउ एन लाई द्वारा कृषि, उद्योग, सेना, एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी के चार प्रस्ताव लाए गए थे।
* 1978 में देंग श्याओपेंग ने "खुले द्वार की नीति" चलाई और आर्थिक सुधार लागू किए।
* अब नीति यह हो गई कि ज्यादा से ज्यादा ~~अंतर्राष्ट्रिय~~ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शुरु हो गया।
* इसके पश्चात् चीन में SEZ (Special Economic Zones) बनाए गए जहाँ MNCs को बहुत सी सुविधाएँ प्रदान की गई और आर्थिक निवेश को आकर्षित किया गया।
* 1988 में कृषि तथा 1998 में उद्योगों में सुधार किए गए थे।
* आज चीन विश्व आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है और ज्यादा से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कर रहा है।
* 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हो गया था।

प्रश्न - 14 - उत्तर

* संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना 1945 में की गई थी।
* इसने शीतयुद्ध काल में भी कई महत्वपूर्ण युद्धों जैसे कोरियाई युद्ध, ईराक युद्ध, इत्यादि को सुलझाने और शांति स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
* 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात विश्व एकध्रुवीय हो गया और अमेरिका का वर्चस्व हो गया।
* एकध्रुवीय विश्व में भी संयुक्त राष्ट्र संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
* संयुक्त राष्ट्र संघ ने शांति स्थापित करने एवं निःशस्त्रीकरण पर जोर दिया है।
* इसने अमेरिका के वर्चस्व के दिनों में उसे हावी होने से भी रोकने का काम किया है।
* संयुक्त राष्ट्रसंघ में आज 193 देश शामिल हैं जिससे सब जगह युद्धों को रोकने व शांतिपूर्वक बातचीत के तहत संघर्ष को सुलझाने में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भूमिका निभाई है।
* संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विकासशील देशों की मदद के लिए भी प्रयास किए हैं। इसने निःशस्त्रीकरण, औपनिवेशीकरण को रोकने, शांतिपूर्ण वार्तालाप, रंग भेद के विरोध, मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
* इस प्रकार एकध्रुवीय विश्व में शक्ति संतुलन को लेकर इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

प्रश्न - 15 : उत्तर

* 1960 के दशक में विश्व में पर्यावरण के मुद्दों पर जोर दिया गया। 1992 में पृथ्वी सम्मेलन इस तरफ प्रमुख प्रयास था। इसके बाद 1997 में जापान के क्योटो

शहर में एक पर्यावरणीय संबंधी कार्यक्रम चलाया गया, जिसमें ग्रीनहाऊस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की बात शामिल थी।

* पर्यावरण के मसलों पर भारत ने "साझी परन्तु अलग-अलग जिम्मेदारियों" पर जोर दिया है।
* 2008 में आयोजित G-8 की बैठक में भारत ने कहा था कि पिछले कुछ दशकों में विकसित देशों ने औद्योगिकरण के दौर में सबसे ज्यादा ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन किया है जबकि विकासशील देशों ने इसमें बहुत कम योगदान दिया है।
* भारत का मानना है कि इस मसले पर विकसित देशों की भूमिका ज्यादा रही है तो जिम्मेदारी भी उन्हें ज्यादा उठानी चाहिए।
* विकासशील देशों को आर्थिक विकास पर भी ध्यान देना है इसलिए उन्हें कुछ रियायत देनी चाहिए।
* भारत ने पर्यावरण के संरक्षण के लिए भी अनेक प्रयास किए हैं जैसे -
  - नेशनल ऑटो फ्यूल पॉलिसी के अंतर्गत स्वच्छतर ईंधन करना अनिवार्य किया गया, पैरिस संधि पर हस्ताक्षर किए तथा अनेक कार्यक्रम चलाए।
* भारत ने 2002 में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए और इसका अनुमोदन किया। इस प्रकार भारत ने विकासशील देशों का इस मुद्दे पर पक्ष लिया है।

प्रश्न - 18 : उत्तर

भारत में शुरुआती तीन आम चुनावों में कॉंग्रेस का प्रभुत्व स्थापित रहा है। प्रथम चुनाव में 364 सीटें, दूसरे में 371 सीटें तथा तीसरे में 361 सीटों के साथ कॉंग्रेस ने अपना प्रभुत्व कायम रखा। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे :-

P.T.O.

(1) कांग्रेस का गठबंधन स्वरूप → कांग्रेस का संगठनात्मक स्वरूप बहुत मजबूत था। उसमें अनेक समूह, हितों का समावेश था। इसमें गरमपंथी, नरमपंथी, दक्षिणपंथी, वामपंथी, उदारवादी, अतिवादी, रेडिकल, कंजरवेटिव, इत्यादि सभी प्रकार के विचारधाराओं के मध्यमवर्गी समाहित थी। इसी कारण कांग्रेस का जनसमर्थन इतना व्यापक था और जनता ने इसे ही चुना।

(2) करिश्माई व अनुभवी नेता → कांग्रेस में अनेक करिशमाई नेता उपस्थित थे जिन्हें व्यापक जनसमर्थन प्राप्त था। जैसे - पं॰ जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री जी इत्यादि ने देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर चुनाव प्रचार किया जिससे इन्हें लोकप्रियता प्राप्त हुई। इन नेताओं को राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत भी प्राप्त थी जिससे जनता ने इसे ही चुना।

(3) गुटों में सहनशीलता → कांग्रेस के अंदर अनेक गुट समाहित थे जिनमें परस्पर सहनशीलता थी। इसमें समाजवादी, साम्यवादी, वामपंथी इत्यादि सभी एक साथ रहते थे। इसी कारण यह एकलौती पार्टी बन गई। लोगों को कांग्रेस से आशाएं थी जिनपर वह खरी भी उतरी। अतः कांग्रेस का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

प्रश्न-17- उत्तर

* सिंडिकेट → 1960 के दशक में कांग्रेस में वरिष्ठ एवं अनुभवी नेताओं का एक अनौपचारिक संगठन था जिसे सिंडिकेट कहा जाता था।
* इसमें के. कामराज, निजलिंगप्पा, अतुल्य घोष, संजीव रेड्डी इत्यादि अनुभवी नेता मौजूद थे।

* सिंडिकेट ने कांग्रेस की नीतियों एवं कार्यक्रमों बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
* प० जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु के पश्चात लाल बहादुर शास्त्री जी को तथा लाल बहादुर शास्त्री जी की मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
* इंदिरा गाँधी का सिंडिकेट के साथ मतभेद हो गया था जिससे कांग्रेस का विभाजन हुआ।
* सिंडिकेट ने एन. संजीव रेड्डी को 1969 के राष्ट्रपति-चुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में रखा था परन्तु उन्हें हार का सामना करना पड़ा। वी.वी. गिरी राष्ट्रपति बन गए।
* इसके बाद मतभेद बढ़ने पर सिंडिकेट कांग्रेस (ओ) में रही और इंदिरा गांधी कांग्रेस (आर) में।
* 1971 में सिंडिकेट की कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा था और इंदिरा की कांग्रेस असली कांग्रेस बन गई।
* इस प्रकार सिंडिकेट का प्रभुत्व खत्म हो गया था।

प्रश्न - 18 : उत्तर

* 25 जून 1975 को रात को भारत में अनुच्छेद 352 के आधार पर अंदरुनी गडबडी के कारण आपातकाल लगाया गया था। इस आपातकाल से भारतीय लोकतन्त्र ने निम्न सबक सीखे :-

(1) पहला तो यही कि भारत को लोकतंत्र से अलग नही किया जा सकता। भारत में कुछ माह का आपातकाल तो लगा जिसमें कई चीज़ों से छेड़छाड़ की गई परन्तु 18 माह बाद पुनः सबकुछ पहले की तरह हो गया। अतः कहा जा सकता है कि भारत को लोकतंत्र से अलग नही हटाया जा सकता।

(2) दूसरा, अब सर्वोच्च न्यायालय ने यह साफ कर दिया है कि अंदरुनी गड़बड़ी का हवाला देकर केवल सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में ही आपातकाल लगाया जा सकता है। अब आपातकाल लगाने के लिए राष्ट्रपति को लिखित में संसद के 2/3 सदस्यों की सहमति पर ही भेजा जाएगा जिसके बाद आपातकाल लागू हो सकता है।

(3) तीसरा, आपातकाल के बाद लोग अपने मौलिक अधिकारों के लिए और अधिक सतर्क हो गए हैं। इसके लिए कई मानवाधिकार आयोग भी काम कर रहे हैं और जनता में जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं। लोगों ने अपने अधिकारों की तरफ ध्यान देना शुरू कर दिया है।

(4). आपतकाल के दौरान पुलिस एवं प्रशासन का सरकार ने गलत उपयोग किया था जिस ओर भी ध्यान दिया गया है। आज भी प्रशासन ऐसा करता है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है।

(5) अतः आपातकाल से भारतीय लोकतंत्र ने कई सबक सीखे हैं।

प्रश्न -19: उत्तर

* 1977 की जनता सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग की जाँच के लिए एक आयोग बैठाया। आजादी के बाद यह दूसरा मौका था जब कोई ऐसा आयोग गठित किया गया था। इसीलिए इसे दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग के नाम से जाना जाता है।
* इसके अध्यक्ष बिन्देश्वरी प्रसाद मण्डल के नाम पर इसे मण्डल आयोग भी कहा जाता है।
* इसका मुख्य काम था देश में अन्य पिछड़ा वर्ग की पहचान करना तथा देश में मौजूद शैक्षिक एवं सामाजिक व्यापकता का पता लगाना।

* मण्डल आयोग ने अपनी जाँच में पाया कि अनुसूचित जाति, जनजाति से अलग भी अनेक ऐसी जातियाँ हैं जिन्हें 'नीच' समझा जाता है।
* इनकी शैक्षिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों में भी बड़ी कम भूमिका है।
* मण्डल आयोग की रिपोर्ट 1980 में आई जब तक जनता पार्टी की सरकार गिर चुकी थी।
* इसकी सिफारिशों में अन्य पिछड़ा वर्ग को शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी नौकरियों में 27% आरक्षण की बात कहीं गई थी तथा भूमि-सुधार इत्यादि भी रखा गया था।
* 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने इसकी सिफारिशों में से एक को लागू कर दिया और ओबीसी को केन्द्रीय नौकरियों और शिक्षण संस्थाओं में 27% आरक्षण दे दिया था।
* इसके पश्चात देश में हिंसा भड़क गई सर्वोच्च न्यायालय में भी मुकदमें दर्ज कराए गए परन्तु न्यायालय का फैसला सरकार के पक्ष में आया।

प्रश्न-20 : उत्तर :

* 2004 के लोकसभा के चुनाव पश्चात भारतीय राजनीति के नए बदलाव ये हुआ कि राजनीतिक दलों में कुछ सहमति बनी जो निम्नलिखित हैं :-

(1) नई आर्थिक नीति पर सहमति :- इस चुनाव के पश्चात अब लगभग सभी राजनीतिक दलों ने सहमति जताई है कि आर्थिक सुधारों से भारत को लाभ हुआ है। नई आर्थिक नीति ने भारत को एक नई आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने में सहायता दी है।

(2) अन्य पिछड़ा वर्ग की शैक्षिक एवं सामाजिक आरक्षण पर सहमति :- अब सभी दलों ने अन्य पिछड़ा वर्ग

प्रश्न-21 : उत्तर

* शीतयुद्ध की शुरुआत 1945 के द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात हुई थी जब अमेरिका और सोवियत संघ महाशक्तियों के रूप में उभरे थे। इस प्रकार विश्व द्विध्रुवीय हो गया और शीतयुद्ध प्रारम्भ हो गया।

* भारत ने शीतयुद्ध के दौरान गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई परन्तु फिर भी सोवियत संघ के साथ

को आरक्षण देने की बात को स्वीकारा है और उन्हें शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ स्वीकार कर लिया है।

(3) क्षेत्रीय दलों के साथ सरकार बनाने पर सहमति का उदय → आज लगभग सभी राजनीतिक दल क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर केन्द्र में सरकार बनाने में सहमत हुए हैं। अब क्षेत्रीय दलों को भी केन्द्र में सरकार में भागीदारी करने का मौका मिल रहा है।

(4) कार्यसिद्धि पर जोर तथा विभिन्न विचारधाओं के गठजोड़ → आज विभिन्न राजनीतिक पार्टी विचारधाराओं के स्थान पर कार्यसिद्धि पर जोर दे रही हैं और विभिन्न विचारधाराओं वाली ~~पार्टी~~ पार्टियाँ एक साथ सरकार बना रही हैं। चाहे वे दल एक दूसरे के विपरीत विचारधाराओं वाले हैं परन्तु सत्ता के मोह में एक साथ सरकार बना रहे हैं।

प्रश्न-21 : उत्तर

* शीतयुद्ध की शुरुआत 1945 के द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात हुई थी जब अमेरिका और सोवियत संघ महाशक्तियों के रूप में उभरे थे। इस प्रकार विश्व द्विध्रुवीय हो गया और शीतयुद्ध प्रारम्भ हो गया।

* भारत ने शीतयुद्ध के दौरान गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई परन्तु फिर भी सोवियत संघ के साथ

भारत के मधुर संबंध थे। भारत और सोवियत संघ अनेक स्तरों पर सहयोग करते थे। दोनों के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य सहयोग था। दोनों ही देश एक दूसरे के काम आते थे और सोवियत संघ भारत का विश्वस्त मित्र था।

(1) राजनीतिक संबंध → भारत और सोवियत संघ के बीच राजनीतिक संबंध अच्छे थे। सोवियत संघ ने भारत की आज़ादी के समय और उसके बाद भी बहुत मदद की थी। भारत के प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ की नियोजन प्रणाली से भी बहुत प्रभावित थे और उसकी विदेश नीति का भी सम्मान करते थे। सोवियत संघ ने भारत के साथ इस दौरान कई संधियां भी की।

(2) आर्थिक संबंध → भारत और सोवियत संघ के बीच अच्छे आर्थिक संबंध थे। सोवियत संघ ने ~~भार~~ भारत की बोकारो, भिलाई और विशाखापट्टनम ~~इस्पात~~ इस्पात कारखानों को लगाने में तथा भारत हेवी इलेक्ट्रॉनिक्स की स्थापना में भी बहुत मदद की। भारत को सोवियत संघ हथियार देने में भी और सैन्य साजो सामान देने में भी बहुत मदद की थी।

(3) सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंध → भारत और सोवियत संघ के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंध भी सुदृढ़ थे। सोवियत संघ के लोग भारतीय सिनेमा तथा गानों से अत्यंत प्रभावित थे। सोवियत संघ में उस समय राजकपूर, अमिताभ बच्चन इत्यादि अभिनेता अत्यंत प्रसिद्ध थे। उसके गणराज्य जैसे उज्बेकिस्तान में तो हिंदी फिल्मी गाने बहुत ही प्रसिद्ध थे। अतः दोनो देशों के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक सहयोग भी था।

P.T.O

(4) <u>सैन्य संबंध</u> → भारत और सोवियत संघ के बीच अच्छे सैन्य संबंध थे। सोवियत संघ ने भारत को उस समय भी सैन्य साजो सामान दिया जब कोई अन्य देना नहीं चाहता था। सोवियत संघ ने 1971 में भी भारत के साथ 20-वर्षीय मित्रता संधि करके भारत को पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध में सहायता प्रदान की थी।

* इस प्रकार सोवियत संघ और भारत के संबंध अत्यंत सुदृढ़ थे। भारत वहाँ से कच्चे तेल का भी आयात करता था। सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने एक विश्वस्त मित्र खो दिया था।

प्रश्न - 22 : उत्तर

* बांग्लादेश 1947 से 1971 तक पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था और पाकिस्तान का ही एक हिस्सा था।
* 1960 के दशक में शेख मुजीबुर्रहमान की आवामी लीग ने वहाँ की सभी सीटों पर चुनाव में जीत हासिल की परन्तु पश्चिमी पाकिस्तान ने उसे मानने से इन्कार कर दिया।
* पूर्वी पाकिस्तान पर पश्चिमी पाकिस्तान ने प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश की और वहाँ पर उर्दू भाषा को बंगाली भाषा और संस्कृति पर थोपना शुरू कर दिया।
* पूर्वी पाकिस्तान भारत के प. बंगाल और असम के कुछ हिस्सों को काटकर बनाया गया था।
* पूर्वी पाकिस्तान ने अपने ऊपर उर्दू भाषा थोपे

नीति का विरोध किया और विद्रोह शुरू कर दिया।
* जनरल याहिया खान ने शेख मुजीबुर्रहमान को जेल डाल दिया।
* इसके पश्चात बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष शुरू हो गया।
* भारत ने इसे नैतिक एवं भौतिक सहायता प्रदान की।
* ~~बांग्ल प्रान्त~~ पूर्वी पाकिस्तान से भारत में लगभग 80 लाख शरणार्थी भारत आ गए और भारत में शरणार्थी समस्या उत्पन्न हो गई।

* 1971 युद्ध और बांग्लादेश का निर्माण :-

* 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों छोरों से हमला शुरू कर दिया।
* पाकिस्तान को इसमें अमेरिका, चीन ने सहायता प्रदान की।
* पाकिस्तान- अमेरिका तथा चीन की धुरी बनती देख भारत ने सोवियत संघ की सहायता ली।
* अक्टूबर 1971 में भारत ने सोवियत संघ के साथ 20 वर्षीय मित्रता संधि पर हस्ताक्षर किए और युद्ध शुरू हो गया।
* भारत ने एक हफ्ते में ही पाकिस्तान की सेना को खदेड़ दिया और पाकिस्तान के 90,000 सैनिकों ने आत्मसर्पण कर दिया।
* इसमें भारतीय थलसेना, जलसेना एवं वायुसेना ने अपना पराक्रम दिखाया।
* इस प्रकार ~~बांग्ला~~ बांग्लादेश का एक देश के रूप में उदय हो गया।
* जुलाई 1972 में भारत -पाकिस्तान ने शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए।
* बांग्लादेश के नए राष्ट्रपति मुजीबुर्रहमान बने और उसनें लोकतंत्र; धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के आदर्श अपनाए।

प्रश्न - 23 : उत्तर

* सुरक्षा → सुरक्षा का बुनियादी अर्थ है खतरे से आजादी। सुरक्षा उन खतरों से होती है जो हमारे केन्द्रीय मूल्यों को प्रभावित करते हैं।

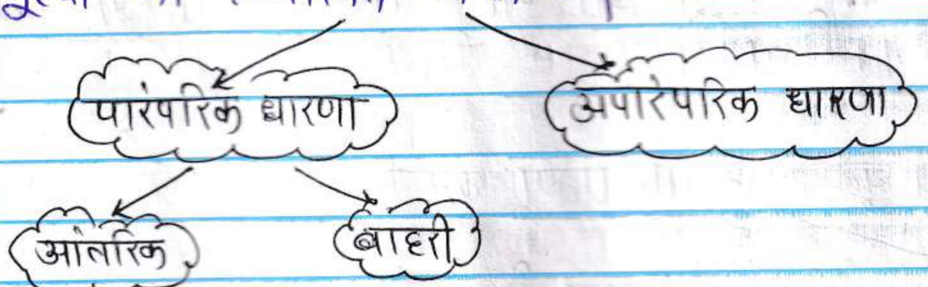

* पारंपरिक धारणा

- सुरक्षा की पारंपरिक धारणा का संबंध सैन्य खतरों से है।
- इसमें किसी देश के केन्द्रीय मूल्यों जैसे - स्वतंत्रता, संप्रभुता एवं अखण्डता पर खतरा होता है।
- पारंपरिक धारणा में ~~खतरा~~ खतरे का स्रोत भी सैन्य क्षमता ही है और उससे बचने का उपाय भी।
- उसकी मुख्य रूप से दो धारणाएँ हैं :-

(1) बाहरी खतरे / सुरक्षा :-

* पारंपरिक धारणा में बाहरी खतरे दूसरे देशों से होते हैं। जैसे जब कोई दूसरा देश सैन्य हमला कर दे।
* इसीलिए सभी देश एक सुरक्षा नीति बनाते हैं जिसमें निम्न बातें होती हैं :-

- आत्मसर्पण → यदि कोई दूसरा देश हमला करे और हम उसके सामने झुक जाएँ

- अपरोध → जब कोई एक देश युद्ध से होने वाले नुकसान को उस हद तक बढ़ा दे ~~की~~ कि युद्ध रुक जाए।
- रक्षा → यदि युद्ध ठन जाए तो उसमें अपने रक्षा करना।
- ~~स~~ शान्ति संतुलन → आस-पास के देशों ~~से~~ खतरे की आशंका को देखते हुए जब कोई देश अपनी सैन्य क्षमता, तकनीक, को उसी के स्तर का बना ले।
- गठबंधन बनाना → आज की सुरक्षा नीति का यह एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें अनेक देश मिलकर एक सैन्य गठबंधन का निर्माण करते हैं जिससे ~~एक~~ एक पर हमला होने पर सभी साथ दे सकें।

* इन खतरों को रोकने के लिए अनेक प्रयास किए जाते हैं -

(1) अस्त्र नियंत्रण → किसी खास किस्म के हथियारों को रखने पर रोक लगाना, जैसे – CTBT, NPT

(2) निःशस्त्रीकरण → उसके अंतर्गत ~~क~~ कुछ हथियारों के इस्तेमाल पर रोक लगाई जाती है। जैसे – BWC, CWC.

(3) विश्वास बहाली के उपाय → इसके अंतर्गत विभिन्न देश जो एक दूसरे से खतरा महसूस करते हैं वे एक-दूसरे को अपनी नीतियों इत्यादि का आदान प्रदान करते हैं।

(2) आंतरिक खतरों से सुरक्षा :-

- सुरक्षा के आंतरिक अवधारणा पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है क्योंकि ज्यादातर देश आज आंतरिक रूप से स्थिर हैं।
- ऐसे खतरे ज्यादातर विकासशील देशों में देखे जा रहे हैं।
- विकासशील देश आंतरिक एवं बाहरी दोनों खतरों से जूझ रहे हैं।
- ~~स~~ आंतरिक खतरों में साम्प्रदायिकता, अलगाववाद, स्वायत्तता की मांगें, नक्सलवाद इत्यादि जैसे मुद्दे आते हैं।
- इन्हें सेना एवं राजनीतिक पार्टियों दोनों ही तरीकों से बातचीत के द्वारा सुलझाया जा सकता है।

प्रश्न - 24 : उत्तर

भारत मे परमाणु नीति का उद्भव :-

* भारत मे परमाणु ऊर्जा का विकास 1940s के दशक मे ही शुरु हो गया था।
* इसमें होमी जहाँगीर भाभा के निर्देशन मे काम चल रहा था।
* भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरु ने भी परमाणु शक्ति मे दिलचस्पी दिखाई थी और इस ओर ध्यान दिया था।
* भारत मे प्रथम परमाणु परीक्षण जब किया गया इंदिरा गाँधी जी प्रधानमंत्री थी। उस समय देश ने बांग्लादेश के लिए पाकिस्तान से युद्ध किया था। भारत की आर्थिक स्थिति भी कुछ ज्यादा अच्छी नही चल रही थी। महँगाई भी बढ़ रही थी, अनेक राजनीतिक मुद्दे चल रहे थे।
* मई 1974 मे स्माइलींग बुद्धा नामक कूटनाम से भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण राजस्थान के पोखरण मे किया था।
* इसके बाद भारत को देश - विदेश स्तर पर कई आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा था।
* इसके पश्चात भारत ने 1998 मे अपनी परमाणु शक्ति को दिखाते हुए मई मे पोखरण, राजस्थान मे दूसरा परमाणु परीक्षण किया। इसका कूटनाम ओपरेशन शक्ति रखा गया था।
* तब तक दक्षिण एशिया के भारत के आसपास के कुई देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद हो चुके थे। अतः परमाणु शक्ति का विकास करना भारत मे आवश्यक हो गया था।

भारत ने अपनी परमाणु नीति निम्न रखी:-

* भारत परमाणु शक्ति का शांतिपूर्ण उपयोग करेगा।
* भारत परमाणु हथियारों का प्रयोग पहले नहीं करेगा।
* भारत ऐसे देशों के खिलाफ परमाणु हथियार इस्तेमाल नहीं करेगा जिनके पास यह शक्ति उपलब्ध नहीं है।
* भारत युद्ध में इसका प्रयोग नहीं करेगा।
* भारत भेदभावपूर्ण अस्त्र नियंत्रण संधियों का समर्थन नहीं करता है।

इसलिए उसने 1996 के CTBT और 1968 की NPT संधि पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

अतः भारत की परमाणु नीति एक आदर्श नीति है।

प्रश्न - 25 : उत्तर

* असम पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक बडा राज्य है तथा यहाँ का भारत के लिए प्रवेशद्वार भी है।
* आजादी के समय पूर्वोत्तर में केवल मणिपुर और त्रिपुरा को छोड़कर अन्य पूरा क्षेत्र असम कहलाता था।
* असम में अनेक जाति, भाषा के लोग रहते थे इसलिए वहाँ स्वायत्तता की मांग उठी।
* असम क्षेत्र में गैर असमी भाषा के लोग सोचते थे कि उन पर असमी भाषा थोपी जा रही है। इसके लिए उन्होंने अनेक आंदोलन चलाए और 'ऑल हिल्स ट्राइबल कम्युनिटी' एक पार्टी का निर्माण किया।

उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'ब' (उत्तराखण्ड) 06 पन्ने

* इस प्रकार भारत सरकार ने असम को अलग करके वहाँ मेघालय, अरुणाचलप्रदेश, मिज़ोरम और नगालैंड नामक राज्यों का निर्माण किया।
* इसके बाद भी आंदोलन चलते रहे तो अनेक जनजातियों को स्वायत्त क्षेत्र और जिले के रूप में स्वायत्तता प्रदान की गई।

* बाहरी लोगों के खिलाफ आंदोलन

* असम मे लोगों ने बाहरी लोगों के खिलाफ भी आंदोलन चलाए और जो लोग 1951 के बाद असम में आकर बसे थे उन्हे वहाँ से निकालना चाहा।

* असम के लोगों का मानना था कि इन लोगों के कारण वहाँ का क्षेत्रीय विकास नही हो पा रहा है और असम आर्थिक रूप से पिछड़ गया है।

* उन्होंने इसके विरोध मे यह भी कहा कि इन बाहरी लोगों ने उनके संसाधनों पर कब्जा कर लिया है।

* 1979 में AASU नामक एक स्टूडेंट यूनियन ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। इसी के साथ असम संग्राम गण परिषद ने भी इसका साथ दिया।

* 1985 में राजीव गाँधी ने उनके साथ समझौता किया और ~~इस~~ यह कहा गया कि बांग्लादेश युद्ध के दौरान और उसके बाद जो लोग असम में आए थे उनकी पहचान की जाएगी और उन्हे बाहर भेजा जाएगा।

* इसके बाद यह संघर्ष बंद हुआ और वहाँ असम गण परिषद सत्ता मे आई। इसने आर्थिक विकास का वायदा किया था।

P.T.O →

प्रश्न - 26 : उत्तर

(क) उत्तर -

* आजाद हिन्दुस्तान का जन्म कठिन परिस्थिपों में हुआ था क्योंकि :-
- आज़ादी के साथ ही भारत का विभाजन भी होना था और भारत, पाकिस्तान नाम के दो देश बने।
- इसमें रजवाड़ों को स्वतंत्र कर दिया गया था जिस कारण इन्हें भारत में शामिल करने में कठिनाइयाँ आईं।
- विभाजन अत्यंत त्रासदीपूर्ण रहा और आजाद हिन्दुस्तान के सामने साम्प्रदायिकता जैसी कठिन परिस्थिति थी।
- बहुत से सांप्रदायिक दंगे हुए और हजारों लोग मारे गए।

अतः भारत को ~~निर्माण~~ आजादी कठिन परिस्थिपों में मिली थी।

(ख) उत्तर :-

* आज़ादी के तुरंत बाद भारत के सामने तीन मुख्य चुनौतियाँ थी :-

(1) एकता स्थापित करने की चुनौति → आजाद भारत में इतनी बड़ी जनसंख्या के साथ विविधताएँ भी बहुत थी। अनेक धर्म, जाति, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा वाले लोग भारतीय भूभाग में निवास करते थे। इन सभी को एकता के सूत्र में बाँधे रखने की चुनौती भारत के सामने मुँह बाये खड़ी थी

इसी के साथ-साथ रियासतों का भारत में विलय करके भी एकता स्थापित करनी थी। इस समस्या को सरदार वल्लभभाई पटेल जी ने सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(2) लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती → यह दूसरी सबसे बड़ी समस्या थी कि इतने बड़े देश में लोकतंत्र को स्थापित कैसे किया जाए, लोकतांत्रिक ढंग से सरकार बनायी और चलाई कैसे जाए, यह एक प्रमुख ~~चुनौति~~ चुनौती थी। भारत के संविधान में अंकित लोकतंत्र के प्रावधानों को अमल में लाना एक बड़ी समस्या थी।

(3) आर्थिक विकास की चुनौती → यह भी आज़ाद भारत के सामने बड़ी चुनौती थी कि देश का आर्थिक विकास कैसे किया जाए? ऐसा विकास करना था जिससे समानता स्थापित हो सके और अमीर और गरीब के बीच के अंतर को मिटाया जा सके। इसके लिए भारत ने नियोजन की प्रक्रिया अपनाई।

अनुक्रमांक → 25313572
दो करोड़ तिरेपन लाख तेरह हजार
पाँच सौ बहत्तर